[This question paper contains 4 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 8719

Unique Paper Code : 12051601

Name of the Paper : हिंदी आलोचना

Name of the Course : **B.A. (H) HINDI – CBCS**

Semester : VI

Duration : 3 Hours　　　　Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों के सन्दर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए –

(10×3=30)

(क) भावों के छानबीन करने पर मंगल का विधान करने वाले दो भाव ठहरते हैं – करुणा और प्रेम। करुणा की गति रक्षा की ओर होती है और प्रेम की रंजन ओर। लोक में प्रथम साध्य रहा है। रंजन का अवसर उनके पीछे आता है। अत: साधनावस्था या प्रयत्नपक्ष को लेकर चलने वाले काव्यों का बीजभाव करुणा ही ठहरती है। इसी से शायद अपने दो नाटकों में रामचरित को लेकर चलने वाले महाकवि भवभूति ने 'करुण' को ही एकमात्र रस कह दिया।

P.T.O.

अथवा

जो हो, जब तक साहित्य का काम केवल मनबहलाव का सामान जुटाना, केवल लोरियाँ गा-गाकर सुलाना, केवल आँसू बहाकर जी हल्का करना था, तब तक उसके लिए कर्म की आवश्यकता न थी। वह एक दीवाना था जिसके गम दूसरे खाते थे। मगर हम साहित्य को केवल मनोरंजन और विलासिता की वस्तु नहीं समझते। हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सचाइयों का प्रकाश हो- जो हममें गति और बेचौनी पैदा करे सुलाए नहीं; क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।

(ख) कविता के क्षेत्र में पौराणिक युग की किसी घटना अथवा देश-विदेश की सुंदरी के बाह्य वर्णन से भिन्न जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी, तब हिंदी में उसे छायावाद के नाम से अभिहित किया गया। रीतिकालीन प्रचलित परंपरा से - जिसमें बाह्य वर्णन की प्रधानता थी - इस ढंग की कविताओं में भिन्न प्रकार के भावों की नए ढंग से अभिव्यक्ति हुई। ये नवीन भाव आंतरिक स्पर्श से पुलकित थे।

अथवा

आज नाना स्वरों में वैचित्र्य-संवलित आकार धारण करके एक ही उत्तर मानवचित्त की गंभीरतम भूमिका से निकल रहा है; मानववाद ठीक है, पर मुक्ति किसकी ? क्या व्यक्ति-मानव

की ? नहीं, सामाजिक मानववाद ही उत्तम समाधान है। मनुष्य को, व्यक्ति-मनुष्य को नहीं, बल्कि समष्टि मनुष्य को, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक शोषण से मुक्त करना होगा - "नान्यः पन्था विद्यते अयनाय।"

(ग) यह कहा जा सकता है कि हमारे मूल राग-विराग नहीं बदले- प्रेम अब भी प्रेम है और घृणा अब भी घृणा, यह साधारणतया स्वीकार किया जा सकता है। पर यह भी ध्यान में रखना होगा कि राग वही रहने पर भी रागात्मक संबंधों की प्रणालियाँ बदल गयी हैं; और कवि का क्षेत्र रागात्मक सम्बन्धों का क्षेत्र होने के कारण इस परिवर्तन का कवि कर्म पर बहुत गहरा असर पड़ा है। निरे 'तथ्य' और 'सत्य' में- या कह लीजिए 'वस्तु-सत्य' और 'व्यक्ति-सत्य'-में यह भेद है कि 'सत्य' वह 'तथ्य' है जिस के साथ हमारा रागात्मक संबंध हैय बिना इस संबंध के वह एक बाह्य वास्तविकता है जो तद्वत काव्य में स्थान नहीं पा सकती। लेकिन जैसे-जैसे बाह्य वास्तविकता बदलती है- वैसे-वैसे हमारे उस से रागात्मक संबंध जोड़ने की प्रणालियां भी बदलती हैं- और अगर नहीं बदलतीं तो उस बाह्य वास्तविकता से हमारा संबंध टूट जाता है।

अथवा

सच बात तो यह है कि आज के कवि को एक साथ तीन क्षेत्रों में संघर्ष करना है। उसके संघर्ष का त्रिविध स्वरूप यह है या होना चाहिए: (1) तत्व के लिए संघर्ष; (2) अभिव्यक्ति को

सक्षम बनाने के लिए संघर्ष; (3) दृष्टि-विकास का संघर्ष। प्रथम का संबंध मानव-वास्तविकता के अधिकाधिक सक्षम उद्घाटन-अवलोकन से है। दूसरे का संबंध चित्रण-सामर्थ्य से है। और तीसरे का संबंध थियरी से है, विश्व-दृष्टि के विकास से है, वास्तविकताओं की व्याख्या से है। यह त्रिविध संघर्ष है।

2. रामचंद्र शुक्ल से पूर्व की हिंदी आलोचना पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'साहित्य का उद्देश्य' पाठ के आधार पर प्रेमचंद की साहित्य-दृष्टि पर विचार कीजिए।

3. 'आधुनिक साहित्य: नई मान्यताएँ' पाठ के आधार पर हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचनात्मक मान्यताओं को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'मेरी साहित्यिक मान्यताएँ' पाठ के आलोक में डॉ. नगेन्द्र की आलोचना दृष्टि पर विचार कीजिए।

4. 'तुलसी साहित्य के सामंतविरोधी मूल्य' पाठ के आधार पर रामविलास शर्मा की आलोचना दृष्टि स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'नई कविता का आत्मसंघर्ष' पाठ के आधार पर मुक्तिबोध की काव्य-दृष्टि स्पष्ट कीजिए।